

बृहद आर्थिक रूपरेखा विवरण

भारतीय अर्थव्यवस्था का वित्तीय वर्ष 2008-09 तीव्र वृद्धि दर से आरंभ हुआ। हालिया चार वर्षों अर्थात् 2004-05 से 2007-08 के दौरान औसत वृद्धि दर 9 प्रतिशत के रिकार्ड स्तर पर आस-पास रही जो इससे पहले के चार वर्षों के दौरान दर्ज 5.6 प्रतिशत की वृद्धि दर की तुलना में है। वर्तमान वर्ष में वैश्विक संकट उत्पन्न होने के कारण विकास मंद रहा। एफआरबीएम के बाद की आवधि में 2007-08 तक राजकोषीय समेकन में संतोषजनक प्रगति हुई। वर्ष 2008-09 के लिए बजट अनुमानों में राजकोषीय घाटा एफआरबीएम अधिनियम, 2003 के तहत निर्धारित स्तर से नीचे रखने की परिकल्पना की गई थी। तथापि, हालिया वैश्विक मंदी और घरेलू अर्थव्यवस्था के कारण प्रति चक्रीय राजकोषीय उपाय करने की आवश्यकता हुई जिससे व्यय बहिर्वाह में वृद्धि हो सकती है, फलतः एफआरबीएम के लक्ष्यों से अस्थायी विचलन हो सकता है। अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में, भारत की बहुत सी क्षमताएं हैं, जो वैश्विक वित्तीय संकट के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में सहायक हो सकती है। इस दिशा में सरकार ने अनेक उपाय किए हैं और अर्थव्यवस्था में दोबारा उच्च वृद्धि होने की संभावना है।

आर्थिक विकास

2. एच1 2008-09 के लिए 7.8 प्रतिशत की विकास दर एच1 2007-08 में दर्ज किए गए 9.3 प्रतिशत की तुलना में कम थी। क्षेत्रीय स्तर पर, एच1 2008-09 में विकास खनन और उत्खनन (4.4), निर्माण (10.5) और समुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाओं में (8.0) में अधिक रहा परन्तु 2007-08 में इसी अवधि की तुलना में कृषि, विनिर्माण और बिजली, गैस और जलापूर्ति में काफी कम रहा। सकल स्थायी पूंजी निर्माण के विकास दर में कुछ मंदी रही, जो पिछले तीन वर्षों (2005-2008) की तुलना में वार्षिक रूप से औसतन 15.0 प्रतिशत से एच1 2008-09 के लिए 11.4 प्रतिशत हो गया, यद्यपि इसकी विकास दर जो 2008-09 की दूसरी तिमाही में 13.8 प्रतिशत थी, पहली तिमाही में 9.0 प्रतिशत से अधिक रही। यह विगत तीन वर्षों (2005-08) में प्रतिवर्ष औसतन 7.1 प्रतिशत से एच1 2008-09 में 6.5 प्रतिशत हो गया। इसका विकास 2008-09 दूसरी तिमाही में, पहली तिमाही के 8 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत हो गया।

3. केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन ने 2008-09 के लिए अग्रिम अनुमान जारी किए हैं। 2008-09 के दौरान उपादान लागत पर सकल घरेलू उत्पाद 33.52 लाख करोड़ रुपए रखा गया है। यह 2007-08 में 9 प्रतिशत के विकास की तुलना में 2008-09 में 7.1 प्रतिशत विकास का द्योतक है। 2008-09 के लिए विकास में मंदी मुख्य रूप से 2007-08 में उद्योग के विकास में 8.1 प्रतिशत से 4.8 प्रतिशत की तेजी से गिरावट आने के कारण हुआ है। उद्योग के भीतर विनिर्माण और निर्माण संबंधी क्रियाकलाप के तेजी से मंद होने की संभावना है। तथापि, इन क्षेत्रों में हुई गिरावट के खनन और उत्खनन सेक्टर में हुई विकास वृद्धि द्वारा आंशिक रूप से प्रतिसंतुलित होने की संभावना है। कृषि, वानिकी और मत्स्यिकी में विकास 2007-08 में 4.9 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में वर्ष 2008-09 में गिरकर 2.6 प्रतिशत होने का अनुमान है। सेवाओं में 2007-08 में 10.9 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में वित्त पोषण, स्थावर सम्पदा, बीमा और कारोबारी सेवाओं में गिरावट तथा सामुदायिक, सामाजिक एवं कार्मिक सेवाओं में वृद्धि के साथ 2008-09 में 9.6 प्रतिशत का विकास तय है। मांग पक्ष से देखने पर बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि होने की संभावना है। निजी अंतिम उपभोग व्यय विकास के 2007-08 में 8.1 प्रतिशत से घटकर 2008-09 में 6.7 प्रतिशत होने की संभावना है, जबकि सरकारी अंतिम उपभोग व्यय के तेजी से बढ़कर इसी अवधि के दौरान 7.4 प्रतिशत से 16.8 प्रतिशत होने की संभावना है। सकल स्थायी पूंजी निर्माण में 2007-08 में 12.9 प्रतिशत से घटकर 2008-09 में 8.9 प्रतिशत विकास होने की संभावना है।

4. आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय द्वारा जारी कृषि उत्पादन के चौथे अग्रिम अनुमानों के अनुसार, वर्ष 2007-08 में कुल खाद्यान्न उत्पादन 230.7 मिलियन टन अनुमानित है, जो 2006-07 (अंतिम अनुमान) में 217.3 मिलियन टन से 13 मिलियन टन अधिक है। लगातार तीन वर्षों के लिए खाद्यान्न उत्पादन में 10 मिलियन टन से अधिक औसत वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है। संचयी दक्षिण पश्चिम मानसून मौसम में विशेष और क्षेत्रीय विसमता वाली लम्बी अवधिक औसत से मामूली कम वर्षा हुई। वर्ष 2008-09 के दौरान 1018.83 लाख हेक्टेयर के सामान्य बुआई क्षेत्र में से 2.3 प्रतिशत कम क्षेत्र में खरीफ की बुआई की गई। वर्ष 2008-09 के लिए खरीफ उत्पादन के पहले अनुमान में, खाद्यान्न, तिलहन, कपास और गन्ना का उत्पादन क्रमशः 115.3

मिलियन टन, 17.9 मिलियन टन, 23.9 मिलियन बेल्स और 294.7 मिलियन टन अनुमानित था। 2007-08 के पहले अग्रिम अनुमानों से तुलना की जाए तो यह खाद्यान्न उत्पादन में 2.8 प्रतिशत वृद्धि दर्शाता है। 2008-09 रबी के लिए उत्साहवर्धक जनक समाचार है कि सभी फसलों के बुआई क्षेत्र में 3.8 प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान है।

5. सीएसओ द्वारा जारी औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक (आईआईपी) के अनुसार अप्रैल-नवम्बर, 2008 में कुल वृद्धि अप्रैल-नवम्बर, 2007 में 9.2 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में वर्षानुवर्ष आधार पर 3.9 प्रतिशत अनुमानित है। मंद विकास का चरण जो 2007-08 के द्वितीयार्ध में आरंभ हुआ, 2008-09 एच2 में भी जारी है। विकास में मंदी विनिर्माण और बिजली सेक्टरों में बहुत अधिक था और खनन सेक्टर के लिए कुछ हद तक संतुलित था। छ: महत्वपूर्ण अवसंरचना उद्योगों के लिए सूचकांक का संयुक्त भारांश आईआईपी में 26.7 प्रतिशत है, नवम्बर, 2007 में 5.1 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में नवम्बर 2008 में वृद्धि घटकर 2.2 प्रतिशत (अंतिम) हो गई। अप्रैल-नवम्बर, 2008-09 के दौरान छ: महत्वपूर्ण अवसंरचना उद्योगों में पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 6.4 प्रतिशत की तुलना में 3.6 प्रतिशत (अंतिम) वृद्धि दर्ज की गई। उपयोग आधारित वर्गीकरण के संदर्भ में, जबकि बुनियादी वस्तुओं, पूंजी वस्तुओं और मध्यवर्ती वस्तुओं में पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान, जिसमें उपभोक्ता वस्तुओं में वृद्धि दर्ज की गई थी, की तुलना में 2008-09 (अप्रैल-नवम्बर) के दौरान बहुत अधिक गिरावट दर्ज की गई। उपभोक्ता वस्तुओं में वृद्धि, उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं में वृद्धि होने के कारण हुई।

राजकोषीय समेकन

6. पश्च एफआरबीएम अवधि में 2007-08 तक, राजकोषीय समेकन के मोर्चे पर स्थिति संतोषजनक रही है। 2008-09 के लिए बजट अनुमानों में राजकोषीय घाटा एफआरबीएम अधिनियम 2003 के तहत निर्धारित स्तर से नीचे रखने की परिकल्पना की गई है। तथापि, वैश्विक तेल कीमतों में वृद्धि, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक क्षेत्र के पक्ष में व्यय में स्पष्ट झुकाव होने की वजह से अतिरिक्त वचनबद्धता एवं वास्तविक अर्थव्यवस्था में वैश्विक वित्तीय संकट के प्रभाव से निज़ात पाने के लिए राजकोषीय प्रोत्साहनों की वजह से यह अनुभव किया गया कि पहले से अभिकल्पित लक्ष्यों को प्राप्त करना कठिन हो सकता है। वृहद अर्थव्यवस्था पर दबाव के वर्ष में राजकोषीय प्रोत्साहन अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट परिपाटियों की तर्ज पर है। केन्द्र के लिए सकल कर-जीडीपी अनुपात, जो पूर्व-एफआरबीएम अवधि में 8-10 प्रतिशत के दायरे में स्थिर था, वह 2006-07 में बढ़कर 11.4 प्रतिशत हुआ और 2007-08 (अंतिम वास्तविक) में और अधिक बढ़कर जीडीपी का 12.5 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2008-09 के बजट में इसे जीडीपी का 13.0 प्रतिशत रखा गया। 2008-09 के पहले नौ महीनों में केन्द्र की सकल कर प्राप्ति पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 9.6 प्रतिशत बढ़ गई। पहले नौ महीनों (अप्रैल-दिसम्बर, 2008-09) में राजस्व व्यय 39.2 प्रतिशत बढ़ गया। इस अवधि के दौरान पूंजी व्यय में 40.2 प्रतिशत की स्पष्ट गिरावट पिछले वर्ष (2007-08) के दौरान भारतीय स्टेट बैंक की इक्विटी की अधिप्राप्ति से संबंधित लेनदेन की वजह से हुई, जो उच्चतर आधार प्रदान करता है। वर्तमान वर्ष (अप्रैल-दिसम्बर, 2008) के पहले नौ महीनों में कुल व्यय बजट अनुमानों (ब.अ.) का 79.5 प्रतिशत था। वर्तमान वर्ष की इसी अवधि के दौरान ऋण-भिन्न प्राप्ति बजट अनुमान का 61.4 प्रतिशत थी। प्राप्तियां केवल 63.5 प्रतिशत व्यय को पूरा करने के लिए ही पर्याप्त थीं जिससे 2,18,262 करोड़ रुपए का राजकोषीय घाटा हुआ। यह पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान दर्ज किए गए 77,578 करोड़ रुपए के राजकोषीय घाटा की तुलना में अधिक है। दिसम्बर, 2008 तक राजस्व घाटा 1,73,830 करोड़ रुपए था। यह भी दिसम्बर, 2007 तक दर्ज किए गए 39,210 करोड़ रुपए के आंकड़े की तुलना में अधिक है। ऋण-भिन्न प्राप्तियां (भारतीय स्टेट बैंक में रिजर्व बैंक की पणधारिता की अधिप्राप्ति को छोड़कर) पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 4.9 प्रतिशत बढ़ गई है। कुल व्यय में 36.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई, यदि एसबीआई में आरबीआई की पणधारिता की अधिप्राप्ति पर 35,531 करोड़ रुपए का एकबारगी व्यय का समायोजन किया जाए। वर्तमान अनुमान के अनुसार वैश्विक वित्तीय संकट से छुटकारा मिल जाए तो राजकोषीय समेकन की प्रक्रिया पुनः पटरी पर आ जाएगी, जिसके आगामी राजकोषीय वर्ष के उत्तरार्ध में होने की संभावना है।

मौद्रिक घटनाक्रम

7. वर्ष 2007-08 में पूंजी अंतर्रवाहों में हुआ उछाल, जो कि स.घ.उ. का 9.2 प्रतिशत था, की वजह से आरक्षित मुद्रा (एम₀) में 30.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो भारतीय रिजर्व बैंक के वार्षिक नीति विवरण में उक्त वर्ष के लिए परिकल्पित स्तर से कहीं अधिक है। वर्ष 2007-08 के दौरान स्थूल मुद्रा में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमानित 17.0-17.5 प्रतिशत के स्तर के मुकाबले 20.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 2008-09 के 16.5-17.0 प्रतिशत का अनुमान, जिसे भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मौद्रिक नीति की तीसरी तिमाही की समीक्षा में संशोधित कर 19.0 प्रतिशत किया गया, के मुकाबले एम₀ में दिनांक 2

जनवरी, 2009 की स्थिति के अनुसार 19.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही में आरक्षित मुद्रा (एम₀) में 29.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई और स्थूल मुद्रा (एम₁) में 20.8 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। जून, 2008 के मध्य तक, बहिर्जात कारकों, (जैसे वैश्विक रूप से वस्तुओं, विशेषकर कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि) द्वारा हुई थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति 2 अंक के आंकड़े में पहुंच गयी। इस प्रकार, भारतीय रिजर्व बैंक को मुद्रास्फीति संबंधी प्रत्याशाओं को रोकने के लिए मौद्रिक नीति की अवस्थिति को सख्त करना पड़ा। नीतिगत घोषणाओं की श्रृंखला में, भारतीय रिजर्व बैंक ने दिनांक 30 अगस्त, 2008 को नकदी आरक्षित अनुपात (सीआरआर) के स्तर को बढ़ाकर 9 प्रतिशत; और 30 अगस्त, 2008 को रिपो दर बढ़ाकर 9.0 प्रतिशत किया।

8. चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में ही पूंजी प्रवाहों में संतुलन देखा गया। साथ ही सख्त मौद्रिक नीति की अवस्थिति से नकदी की कमी देखी गई। कुछ प्रमुख वैश्विक वित्तीय संस्थाओं के बंद हो जाने से सितम्बर, 2008 में वैश्विक वित्तीय संकट से यह कमी और बढ़ गई। वैश्विक वस्तु कीमतों, विशेषकर कच्चे पेट्रोलियम की कीमतों में गिरावट के मौद्रिक नीति की स्थिति सहज होने में सहायता मिली और परिणामस्वरूप अक्टूबर, 2008 से जनवरी 2009 तक के दौरान कई नीतिगत उपाय किए गए। इनमें, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित शामिल थे: 17 जनवरी, 2009 से नकदी आरक्षित अनुपात का स्तर घटाकर 5.0 प्रतिशत किया गया; 2 जनवरी, 2009 को रिपो दर का स्तर घटाकर 5.5 प्रतिशत; 2 जनवरी, 2009 को रिवर्स रिपो दर का स्तर घटाकर 4.0 प्रतिशत; 8 नवम्बर, 2008 से सांविधिक नकदी अनुपात के स्तर में से एक प्रतिशत बिन्दु घटाकर एनडीटीएल (निवल मांग और समय देयता) का 24 प्रतिशत किया गया। इन उपायों के पश्चात नकदी की स्थिति पर्याप्त रूप से सहज हो गई। 91-दिवसीय राजकोषीय हंडियों पर परिपक्वता आय, जो 26 मार्च, 2008 को बढ़कर 7.23 प्रतिशत हो गई थी, वह 28 जनवरी, 2009 को घटकर 4.79 प्रतिशत हो गयी।

9. चालू वित्त वर्ष (अप्रैल-19 दिसम्बर 2008) के प्रथम नौ माह के दौरान, आरक्षित मुद्रा में वित्तीय वर्ष 2007-08 की इसी अवधि में 14.0 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में (-) 4.5 प्रतिशत की गिरावट हुई। स्थूल मुद्रा गत वर्ष की इसी अवधि में 11.7 प्रतिशत की तुलना में 10.6 प्रतिशत (अप्रैल 19 दिसम्बर, 2008) की वृद्धि हुई; बैंक ऋण में पिछले वर्ष की इसी अवधि में 10.0 प्रतिशत की तुलना में 12.0 प्रतिशत (अप्रैल-19 दिसम्बर, 2008) की वृद्धि हुई। दूसरी तिमाही से मौद्रिक कुल राशियों में संतुलन अधिक मुखर रहा है। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा खाद्य-भिन्न ऋण में 2 जनवरी, 2009 को वर्षानुवर्ष आधार पर 23.9 प्रतिशत की वृद्धि की गई, जो एक वर्ष पहले की तुलना में 22.0 प्रतिशत अधिक है। इसी अवधि के लिए, वास्तविक ऋण जनवरी 2008 के 17 प्रतिशत से बढ़कर जनवरी 2009 में 18 प्रतिशत हो गया। जमा वृद्धि में विस्तार के सापेक्ष ऋण वृद्धि में उच्चतर विस्तार एक वर्ष पहले दर्ज किए गए 71.83 प्रतिशत की तुलना में 2 जनवरी, 2009 को 73.48 पर अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के वर्षानुवर्ष ऋण-जमा अनुपात में परिलक्षित हुआ।

मुद्रास्फीति

10. थोक मूल्य सूचकांक की दृष्टि से मापित मुद्रास्फीति वर्ष 2003-04 में 3.8-6.9 प्रतिशत, 2004-05 में 4.3-8.7 प्रतिशत, वर्ष 2005-06 में 3.3-5.7 प्रतिशत, 2006-07 में 3.7-6.7 प्रतिशत और अप्रैल-मार्च 2007-08 के दौरान 3.1 से 8.0 प्रतिशत के रेंज में थी। चालू राजकोषीय वर्ष का आरंभ लगभग 8 प्रतिशत की मुद्रास्फीति से हुआ जो जून के पहले सप्ताह में दो अंक का आंकड़ा छू गई। अगस्त के पहले सप्ताह में यह बढ़कर 12.9 प्रतिशत और सितम्बर में 12 प्रतिशत से ऊपर रही। अक्टूबर 2008 में यह 12 प्रतिशत से कम हो गई और बाद में नवम्बर 2008 के पहले सप्ताह में यह गिरकर एक अंक के आंकड़े में आ गई। तब से जनवरी 2009 के मध्य में संक्षिप्त बढ़ोतरी के अतिरिक्त इसमें गिरावट होती रही है और 31 जनवरी, 2009 को समाप्त सप्ताह को यह 4.39 प्रतिशत थी। चालू राजकोषीय वर्ष में प्रथम 43 सप्ताह में 1.5 प्रतिशत की संघयी वृद्धि 2007-08 के प्रथम 43 सप्ताह के 4.1 प्रतिशत से महत्वपूर्ण रूप से कम है।

11. प्राथमिक वस्तुओं के 9.1 प्रतिशत की तुलना में वार्षिक (वर्षानुवर्ष) थोक मूल्य सूचकांक दर 31 जनवरी, 2009 को 4.39 प्रतिशत रही। ईंधन समूह में (-)3.5 प्रतिशत तथा विनिर्मित उत्पादों में 5.5 प्रतिशत रही। जिंसों के तीन व्यापक समूहों के सम्बन्ध में मुद्रास्फीति पिछले वर्ष की तुलना में सभी मुख्य तीन समूहों के सम्बन्ध में मूल्यों में मजबूती को प्रदर्शित करती हैं, लेकिन ईंधन, तथा विद्युत और विनिर्मित उत्पाद के सम्बन्ध में मुद्रास्फीति में नवम्बर, 2008 के पहले सप्ताह से कुछ गिरावट देखी गयी। प्राथमिक वस्तुओं के सम्बन्ध में मुद्रास्फीति में निरन्तर बढ़ोतरी के खाद्य, खाद्य-भिन्न और खनिज सूचकांक तथा कुछ अन्य आवश्यक जिंसों के सम्बन्ध में अपने निहितार्थ हैं।

12. औसत वार्षिक थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति 2004-05 में 6.5 प्रतिशत से घटकर 2005-06 में 4.4 प्रतिशत, 2006-07 में 5.4 प्रतिशत और 2007-08 में 4.7 प्रतिशत हो गयी। मुद्रास्फीतिकारक दबावों में कच्चे तेल, खनिज और धात्विक उत्पादों के अन्तरराष्ट्रीय कीमतों की मजबूती से वर्ष 2008-09 के दौरान तेजी आयी। विश्व बाजारों में इन वस्तुओं के मूल्यों में बढ़ोतरी से, आयातित मुद्रास्फीति ने वर्ष 2008-09 में घरेलू मुद्रास्फीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। तथापि, वर्ष के पहले भाग में उच्च मुद्रास्फीति के कारण, 52 सप्ताहों की औसत मुद्रास्फीति 24 जनवरी, 2009 को 9.2 प्रतिशत हो गयी जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 52 सप्ताहों के औसत के 4.6 प्रतिशत से काफी उच्च थी। प्राथमिक वस्तुओं के सम्बन्ध में, 24 जनवरी, 2009 को औसत 52 सप्ताह मुद्रास्फीति 10.6 प्रतिशत रही जो पिछले वर्ष में 8.0 प्रतिशत के औसत 52 सप्ताह मुद्रास्फीति की अपेक्षा उच्च थी।

वैदेशिक क्षेत्र

13. सकल घरेलू उत्पाद (सघउ) से व्यापार के अनुपात जो व्यापार मुक्तता का सूचक है, में 2000-01 में सघउ के 22.5 प्रतिशत से वृद्धि होकर यह 2007-08 में सघउ का 36.2 प्रतिशत (भुगतान संतुलन आधार पर) हो गया। यदि सेवाओं को शामिल किया जाता है तो यह अनुपात 2007-08 में और अधिक बढ़कर सघउ के 48.3 प्रतिशत की वृद्धि दिखाता है। भारत के पण्यगत निर्यातों और आयतों में (सीमाशुल्क आधार पर, अमरीकी डालर में) वर्ष 2007-08 में क्रमशः 28.9 प्रतिशत और 35.4 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। वैश्विक मंदी के बावजूद, चालू वर्ष के पहले नौ महीनों में निर्यात में 17.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गयी और यह 132 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गया जो पिछले वर्ष के निर्यात लक्ष्य का लगभग 66 प्रतिशत है। अप्रैल-सितम्बर, 2008 के दौरान निर्यात में वृद्धि के मुख्य कारक पेट्रोलियम उत्पाद, इंजीनियरिंग वस्तुएं, कृषि तथा सम्बद्ध उत्पाद और रसायन तथा सम्बन्धित उत्पाद थे।

14. 2008-09 (अप्रैल-दिसम्बर) के दौरान, कुल आयात में अमरीकी डालर में 31.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। पेट्रोलियम, तेल और स्नेहक (पीओएल) तथा गैर-पीओएल आयातों में क्रमशः 44.8 प्रतिशत और 25.3 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। अप्रैल-दिसम्बर, 2008 में पण्यगत व्यापार घाटा 94 बिलियन अमरीकी डालर था जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के व्यापार घाटे से तुलना करने पर 59 प्रतिशत उच्च था। भारत के सेवा क्षेत्र के निर्यात में 22.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी होकर यह 2007-08 में 90 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। ऐसा मुख्यतः सॉफ्टवेयर सेवाओं की वजह से हुआ। सेवा क्षेत्र में निर्यात वर्ष 2007-08 में पण्यगत निर्यातों का लगभग 54 प्रतिशत है। वर्ष 2008-09 (अप्रैल-सितम्बर) के दौरान सेवा क्षेत्र में निर्यातों में सॉफ्टवेयर तथा वित्तीय सेवाओं में 22 प्रतिशत तक बढ़ोतरी होने की वजह से 21.5 प्रतिशत तक वृद्धि हुई। तथापि, 18 प्रतिशत की भागीदारी वाले व्यवसाय सेवाओं ने पिछले वर्ष की इसी अवधि से तुलना करने पर अप्रैल-सितम्बर, 2008 में 13.7 प्रतिशत की कम विकास दर दर्ज की।

15. वर्ष 2008-09 की पहली छमाही में भारत के भुगतान संतुलन (बीओपी) में वैश्विक वित्तीय संकट के लक्षण स्पष्टतः देखे गए। वर्ष के पहले छह माह के दौरान (अप्रैल-सितम्बर, 2008) व्यापार घाटा पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 43.2 बिलियन (स.घ.उ. का 8.2 प्रतिशत) से तुलना करने पर 69.2 बिलियन अमरीकी डालर (सघउ का 11.8 प्रतिशत) हो गया। इसी प्रकार, वस्तु और सेवा घाटा गत वर्ष 25.2 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 4.8 प्रतिशत) की तुलना में बढ़कर 46.3 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 7.9 प्रतिशत) हो गया। तथापि, अदृश्य शेषों में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई दी, जो 2007-08 में 32.3 बिलियन (स.घ.उ. का 6.2 प्रतिशत) से बढ़कर 2008-09 के दौरान 46.8 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 8 प्रतिशत) हो गए जिसने उच्चतर व्यापार घाटे के प्रभाव को आंशिक रूप से निष्प्रभावी किया। इसके परिणामस्वरूप, चालू खाता घाटा (सीएडी) 2007-08 में 11 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 2.1 प्रतिशत) की तुलना में 2008-09 की पहली छमाही में 22.3 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 3.8 प्रतिशत) था।

16. अप्रैल-सितम्बर 2007 में 18.4 बिलियन अमरीकी डालर के अंतर्प्रवाह की तुलना में वैश्विक संकट के परिणामस्वरूप, अप्रैल-सितम्बर 2008 के दौरान 5.5 बिलियन अमरीकी डालर की सीमा तक पोर्टफोलियो निवल बहिर्प्रवाह हुआ है। तथापि, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में गत वर्ष इसी अवधि के दौरान, 4.9 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 198 प्रतिशत की वृद्धि होकर 14.6 बिलियन अमरीकी डालर हो जाना एक सुखद बात रही है। 2007-08 में, भारत का व्यापार घाटा, 2006-07 के 61.8 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 6.7 प्रतिशत) से बढ़कर 91.6 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 7.8 प्रतिशत) हो गया। तथापि, चालू खाता घाटा, 2006-07 में 9.6 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 1 प्रतिशत) की तुलना में 17 बिलियन

अमरीकी डालर था, जो सकल घरेलू उत्पाद का 1.5 प्रतिशत था। यह मुख्यतया अदृश्य खाते, में 74.6 बिलियन अमरीकी डालर के अधिशेष के कारण था, जो 2007-08 में सकल घरेलू उत्पाद का 6.4 प्रतिशत था। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पोर्टफोलियो, ईसीबी, अल्पावधि ऋण में वृद्धि के कारण, सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में निवल पूंजी प्रवाह 2006-07 के 4.9 प्रतिशत से बढ़कर 2007-08 में 9.2 प्रतिशत हो गया।

17. पूंजी प्रवाहों की संरचना में परिवर्तन हो रहा है। मुख्य विशेषता विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अंतर्प्रवाह में 2006-07 के 23.6 बिलियन अमरीकी डालर से 55.9 प्रतिशत की वृद्धि होकर इसका 2007-08 में 36.8 बिलियन अमरीकी डालर हो जाना था। यह प्रवृत्ति चालू वित्त वर्ष में जारी रही और सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह 2008-09 की पहली छमाही के दौरान 14.6 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गए थे, जबकि 2007-08 में इसी अवधि के दौरान यह 4.9 बिलियन अमरीकी डालर थे। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अन्तर्प्रवाह व्यापक थे और वित्तीय सेवाओं, विनिर्माण, बैंकिंग सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं और निर्माण जैसी व्यापक आर्थिक गतिविधियों में फैले हुए थे। विदेशों में निवल प्रत्यक्ष निवेश 2006-07 में लगभग 15.0 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2007-08 में 18.84 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। तथापि, वर्तमान वर्ष में (अप्रैल-सितम्बर, 2008) में यह घटकर 6.1 बिलियन अमरीकी डालर रह गया है।

18. विदेशों में अमरीकी डालर शेष के पुनर्भरण हेतु विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा पोर्टफोलियो निवेश के प्रत्यावर्तन के कारण घरेलू विदेशी विनिमय बाजार में मांग-पूर्ति असन्तुलन के चलते, रुपया विनिमय दरों में तेजी से गिरावट हुई है और अप्रैल-दिसम्बर, 2008 के बीच वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान अमरीकी डालर की तुलना में मुद्रा में 17.7 प्रतिशत तक अवमूल्यन हुआ। पिछले बारह महीनों के दौरान वर्षानुवर्ष आधार पर (दिसम्बर 2007 की तुलना में दिसम्बर, 2008) अमरीकी डालर की तुलना में रुपए के मूल्य में 18.9 प्रतिशत का अवमूल्यन और भी अधिक था। रुपए के मूल्य में इस अस्थिरता के परिणामस्वरूप निर्यातकों, आयातकों और ऋण अदायगियों पर प्रभाव पड़ा है।

19. भारतीय रिजर्व बैंक ने मुद्रा में स्थिरता लाने के लिए विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप किया है। अतः विदेशी मुद्रा भंडार मई 2008 में 314.6 बिलियन अमरीकी डालर के सर्वोच्च स्तर से घटकर 9 जनवरी 2009 को 255 बिलियन अमरीकी डालर रह गया। चूंकि विदेशी मुद्रा भंडार का मूल्यनिर्धारण अमरीकी डालर में किया जाता है, अतः पारस्परिक विनिमय दरों में परिवर्तन का प्रभाव मूल्यनिर्धारण माध्यम के जरिए प्रारक्षित भंडार के स्तरों पर पड़ता है।

20. संयुक्त राज्य अमरीका और अन्य विकसित देशों में वित्तीय संकट, जो सितम्बर 2008 से अपने चरम पर था, का भारत सहित विश्वव्यापी प्रभाव था। वर्ष 2009 में विश्व अर्थव्यवस्था के लिए विकास के अनुमानों को बहुपक्षीय संस्थाओं द्वारा क्रमिक रूप से कम किया गया है। संकट की विशालता को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने, भारतीय रिजर्व बैंक, जिसने उपयुक्त मौद्रिक उपायों की शुरुआत की, के साथ मिलकर सक्रिय कदम उठाए, जिनमें राजकोषीय प्रोत्साहन शामिल है। कुल मिलाकर नीतिगत उद्देश्य यह रहा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्विक वित्तीय संकट का प्रभाव न्यूनतम पड़े। इस समय नीतिगत दृष्टिकोण में लचीलापन लाने की आवश्यकता है जिससे विकास की गति को पुनः पटरी पर लाया जा सके। इसके साथ ही यह परिकल्पना की गई है कि राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया आगामी वित्त वर्ष से पुनःआरम्भ की जा सकेगी।

वृहत आर्थिक रूपरेखा विवरण
(आर्थिक कार्य निष्पादन : एक दृष्टि में)

क्र.सं.	मद	निरपेक्ष मूल्य		प्रतिशत परिवर्तन	
		अप्रैल-दिसंबर		अप्रैल-दिसंबर	
		2007-08	2008-09	2007-08	2008-09
वास्तविक क्षेत्र					
1.	उपादान लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (हजार करोड़ रुपए) ^{एफ}				
	(क) वर्तमान मूल्यों पर	4320.8 ^{त्व.अ.}	4989.8 ^{अ.अ.}	14.3	15.5
	(ख) 1999-2000 के मूल्यों पर	3129.7 ^{त्व.अ.}	3351.6 ^{अ.अ.}	9.0	7.1
2.	औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक ⁽¹⁾	258.6	268.7	9.2	3.9
3.	थोक मूल्य सूचकांक (आधार 1993-94=100) ⁽²⁾	219.0	230.1	4.8	5.1
4.	उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (2001=100) ⁽³⁾	134.0	147	5.5	9.7
5.	मुद्राआपूर्ति (एम3) (हजार करोड़ रुपए) ⁽⁴⁾	3892.7	4235.1	11.7	10.6
6.	वर्तमान मूल्यों पर आयात*				
	(क) करोड़ रुपए	693445	1003947	13.0	44.8
	(ख) मिलियन अमरीकी डालर	171718	225809	27.8	31.5
7.	वर्तमान मूल्यों पर निर्यात*				
	(क) करोड़ रुपए	454997	585594	9.2	28.7
	(ख) मिलियन अमरीकी डालर	112737	131990	23.5	17.1
8.	व्यापार घाटा (मिलियन अमरीकी डालर)*	-58981	-93819
9.	विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियां				
	(क) करोड़ रुपए में	1050485	1194790	39.6	13.7
	(ख) मिलियन अमरीकी डालर में	266553	246603	56.6	-7.5
10.	चालू लेखा संतुलन (मिलियन अमरीकी डालर में) [@]	-17034	-22332		
सरकारी वित्त साधन (करोड़ रुपए में)[#]					
1.	राजस्व प्राप्तियां	355,646	375,937	26.6	5.7
2.	कर राजस्व (निवल)	295,994	309,927	27.5	4.7
3.	कर-भिन्न राजस्व	59,652	66,010	22.4	10.7
4.	पूंजीगत प्राप्तियां (5+6+7)	118,607	221,279	15.4	86.6
5.	ऋणों की वसूली	3,304	2,974	-58.5	-10
6.	अन्य प्राप्तियां	37,725	43		
7.	उधार और अन्य देनदारियां	77,578	218,262	-18.2	181.3
8.	कुल प्राप्तियां (1+4)	474,253	597,216	23.6	25.9
9.	आयोजना-भिन्न व्यय	337,090	426,419	23.8	26.5
10.	राजस्व लेखा	280,050	403,758	10.3	44.2
	जिसमें:				
11.	ब्याज भुगतान	111,764	123,735	20.7	10.7
12.	पूंजी खाता	57,040	22,661	209.8	-60.3
13.	आयोजना व्यय	137,163	170,797	23.0	24.5
14.	राजस्व खाता	114,806	146,009	22.3	27.2
15.	पूंजीगत खाता	22,357	24,788	26.9	10.9
16.	कुल व्यय (9+13)	474,253	597,216	23.6	25.9
17.	राजस्व व्यय (10+14)	394,856	549,767	13.6	39.2
18.	पूंजी व्यय (12+15)	79,397	47,449	120.4	-40.2
19.	राजस्व घाटा (17-1)	39,210	173,830	-41.3	343.3
20.	राजकोषीय घाटा {16-(1+5+6)}	77,578	218,262	-18.2	181.3
21.	प्रारम्भिक घाटा (20-11)	-34,186	94,527	-1639.9	-376.5

त्व.अ. त्वरित अनुमान

अ.अ. अग्रिम अनुमान

एफ. अवधि अप्रैल-सितंबर से संबंधित है।

* सीमाशुल्क आधार पर; संशोधित आधार की तुलना में अनन्तिम आधार पर चालू वर्ष हेतु तुलनात्मक अध्ययन

1. आधार 1993-94=100 अवधि अप्रैल-नवम्बर से सम्बन्ध

2. 24 जनवरी की स्थिति के अनुसार (बिन्दुवार)

3. दिसंबर के अंत (बिन्दुवार)

4. वित्तीय वर्ष के दौरान अंतर

लेखा महानियंत्रक, वित्त मंत्रालय द्वारा संसूचित आंकड़े

@ वर्ष 2007-08 के सम्बन्ध में अवधि अप्रैल-मार्च तथा वर्ष 2008-09 के लिए अवधि अप्रैल-सितंबर से सम्बन्धित है।